सितम्बर 2020

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

पराया काम अपना 36

बेहाल किसान 32

यूपी में जंगलराज

04

R.N.I. No. 68832/97

हर तरफ महंगाई, भ्रष्टाचार एवं कुशासन का बोलबाला है। करोड़ों लोगों को दो जून पेट भर खाना नसीब नहीं। वर्तमान सरकार की इस बारे में कोई नीति नहीं है और न गरीबी के खिलाफ कोई संकल्प है। समाज में बराबरी लाने के बजाए विषमता की खाई को बढ़ाया जा रहा है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

सितम्बर 2020

वर्ष 21 | संख्या 11

प्रिय पाठकों,

समाजवादी बुलेटिन का यह नया अंक बदले हुए रंग-रूप और कलेवर में आपके हाथों में है । इसमें समाचार के साथ विचार का संतुलन बनाये रखते हुए आपके लिए पठनीय सामग्री को हर पन्ने पर समेटा गया हैं। हम निरंतर ऐसी ही सामग्री लेकर आयेंगे। आशा हैं आपको बुलेटिन का यह नया रूप पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

आस्था प्रिंटर्स, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

आजम साहब की रिहाई की बाट जोह रहे समाजवादी 30

04 कवर स्टोरी

यूपी में जंगलराज

पराया काम अपना 36

बेहाल किसान 32

यूपी में जंगलराज

बातें ज्यादा, काम कम! उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार इसी नीति पर चल रही है। प्रदेश में कानून-व्यवस्था ठप है, विकास पटरी से उतरा है, भ्रष्टाचार का बोलबाला है, समाज का हर तबका त्रस्त है लेकिन सरकार एवं उसके मुखिया बस बड़ी-बड़ी बातें बनाने में लगे हैं। जब रोम जल रहा था तब नीरो बांसुरी बजा रहा था और जब उत्तर प्रदेश जंगलराज में तब्दील हो चुका है तो भाजपा सरकार के मुखिया लोगों को भटकाने के लिए अलग ही मुद्दों का राग अलाप रहे।

मुख्यमंत्री 'ठोक दो' की नीति पर चल रहे हैं तो अफसरशाही के बीच लूट लो की प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई है। सत्ता दल के विधायक अपनी ही सरकार के पोल खोल अभियान में लग गए हैं। मुख्यमंत्री का जीरो टॉलरेंस का दावा जनता को सिर्फ बहकाने के लिए है। राज्य के सचिवालय से ही भ्रष्टाचार और ठगी के मामले सामने आ रहे हैं।

भाजपा राज में लोकतंत्र और संविधान दोनों का तिरस्कार हो रहा है। जनता भाजपा के जिन लोकलुभावन वादों से भ्रमित हुई थी अब उनकी सच्चाई जानने लगी है। प्रदेश में अपराधों की असाधारण वृद्धि से यह प्रदेश हत्या प्रदेश के रूप में बदनाम हो गया है। भाजपा राज में प्रदेश के गौरव से खिलवाड़ हो रहा है।

हालात ये हैं कि भाजपा राज का परिचय अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार और चारों तरफ भय, भ्रम का वातावरण हो गया है। हत्या, लूट, अपहरण और बलात्कार का बोलबाला है। बेतहाशा मंहगाई, अवरूद्ध विकास, बेकारी, किसानों की बर्बादी से जिंदगी दूभर हो गई है। फर्जी एनकाउण्टर, निर्दोषों के जीवन से खिलवाड़ पर कोई अफसोस नहीं। बच्चियों के साथ आए दिन दुष्कर्म की घटनाओं से हर परिवार दहला हुआ है। भाजपा राज में दलितों पर अत्याचार काफी बढ़ गए हैं।

प्रदेश में सत्ता संरक्षित दबंगों का हर तरफ आतंक है। भाजपा सरकार के जंगलराज में पुलिस मित्र तो नहीं बन सकी, अत्याचार और अन्याय का पर्याय जरूर बन गई है। अपराधियों को जरा भी खौफ नहीं रह गया है। वे बेखौफ हो भी क्यों न जब पुलिस और प्रशासन के आला अधिकारी भी उनकी साजिशों में शरीक हो जाते हैं। ऐसे में जनता किससे न्याय की आशा करे? कई जिलों में महिला पुलिसकर्मी को अपने किसी वरिष्ठ से ही उन्हें असुरक्षा होने का खौफ जता चुकी हैं। तो फिर कहां है कानून का राज? महिला पुलिस ही सिस्टम में बैठे भेड़ियों से सुरक्षित नहीं तो किस मुंह से महिला सम्मान या बेटी बचाओ की बातें भाजपा सरकार में हो रही है?

राजधानी लखनऊ में आकर कई परिवार अपने जिले में न्याय न मिलने पर आत्महत्या का प्रयास करते रहे हैं। कमजोरों पर भाजपा सरकार की दहशतगर्दी इतनी बढ़ी हुई है कि लोग विधान भवन व लोक भवन के सामने ही आत्मदाह करने

को मजबूर हो रहे हैं। जिलों में कहीं सुनवाई न होने, न्याय न मिलने से परेशान लोगों को आत्मदाह के अलावा दूसरा रास्ता नहीं सूझता है। कमजोरों पर सरकार का अत्याचार बढ़ता जा रहा है। दलितों पर अत्याचार के मामले सभी हदें पार कर गए हैं।

उत्तर प्रदेश में फर्जी एनकाउंटर और हिरासत में मौतों की तमाम घटनाओं का स्वतः संज्ञान लेकर मानवाधिकार आयोग प्रदेश की भाजपा सरकार को कई नोटिसें भेज चुका है। लेकिन पुलिस को न सुधरना था, न सुधरना है। दरअसल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के 'ठोक दो' आर्डर पर कानून को धता बताते हुए हिरासत में हत्या, फर्जी एनकाउण्टर, लूट और हत्या की बढ़ती घटनाओं पर पुलिस के गैर जिम्मेदाराना और संवेदनहीन व्यवहार के कारण देश ही नहीं विदेशों तक में राज्य की बदनामी हो रही है।

जो पीड़ित होता है उसके प्रति असंवेदनशील रवैया अपनाया जाना भाजपा सरकार का दस्तूर बन गया है। जनसामान्य पर चौतरफा मार पड़ रही है। एक ओर कोरोना का प्रकोप बढ़ रहा हैं,

उत्तर प्रदेश में फर्जी एनकाउंटर और हिरासत में मौतों की तमाम घटनाओं का स्वतः संज्ञान लेकर मानवाधिकार आयोग प्रदेश की भाजपा सरकार को कई नोटिसें भेज चुका है। लेकिन पुलिस को न सुधरना था, न सुधरना है।

वहीं मंहगाई की मार से हर कोई परेशान हैं। भाजपा सरकार बच्चियों के साथ दुष्कर्म और हत्या जैसे अमानवीय अपराधों पर रोक लगाने में अक्षम साबित हुई है। व्यापारी लुट रहे हैं। किसान जान गंवा रहे हैं लेकिन भाजपा नेताओं की दबंगई का कोई इलाज नहीं, उन्हें मनमानी की छूट मिली हुई है।

भाजपा राज में व्यापारियों का जानमाल असुरक्षित है। व्यापारियों को सुरक्षा नहीं मिल रही है। राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के कई जनपदों में व्यापारी लूट, अपहरण और हत्या के शिकार हुए हैं। खुद मुख्यमंत्री जी के गृह जनपद में लूट और दुष्कर्म के कई मामले सामने आए हैं। प्रदेश में बढ़ते अपराधों के पीछे अपराधियों को सत्ता का संरक्षण प्राप्त होना है। भाजपा नेता बेलगाम हो गए हैं। सत्ताशीर्ष पर बैठे नेता इन्हें बचाते हैं। सरकार का ध्यान प्रशासन पर कम, राजनीतिक स्वार्थ साधने पर ज्यादा रहता है। वह किसानों, नौजवानों के प्रति दमनकारी नीतियों पर उतर आई है। गरीबों, महिलाओं और समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के प्रति उसका रवैया असंवेदनशील है। सत्ता के अहंकार में वह जनता का उत्पीड़न करने लगी है।

राज्य सरकार माफियाओं के आगे नतमस्तक है। 'लुटेरों को संरक्षण, गरीब को गोली' यही भाजपा सरकार की जनता को देन है। न रोजगार, न

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के 'ठोक दो' आर्डर पर कानून को धता बताते हुए हिरासत में हत्या, फर्जी एनकाउण्टर, लूट और हत्या की बढ़ती घटनाओं पर पुलिस के गैर जिम्मेदाराना और संवेदनहीन व्यवहार के कारण देश ही नहीं विदेशों तक में राज्य की बदनामी हो रही है।

RADO
31% OFF

सरकार का ध्यान प्रशासन पर कम, राजनीतिक स्वार्थ साधने पर ज्यादा रहता है। वह किसानों, नौजवानों के प्रति दमनकारी नीतियों पर उतर आई है।

किसानों के साथ न्याय, न कानून व्यवस्था का राज, और नहीं विकास का बुनियादी ढांचा। भाजपा सरकार की विकास की कोई योजना न होने से उत्तर प्रदेश अब अपराध प्रदेश बनकर रह गया है। उद्योग धंधे चौपट होने से बेरोजगारी चरम पर है। मुख्यमंत्री लाखों रोजगार दे दिए जाने व लाखों अन्य रोजगार देने की घोषणाएं करते थकते नहीं लेकिन ये रोजगार कहां और कैसे उपलब्ध कराए गए हैं इसका कोई ब्योरा सरकार के पास नहीं है। राज्य की आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि किसानों के लाभ की कई योजनाएं बंद हो रही है। गन्ना किसानों को भुगतान नहीं करने वाले मिलों पर कार्रवाई के नाम पर चुप्पी है।

सड़कें गड्ढा मुक्त करने की तारीखे तो कई बार बदल चुकी हैं लेकिन अभी तक सड़कों में कुछ सुधार नहीं है। जहां सड़के बनती हैं वे भी कुछ दिनों बाद ही गड्ढो में तब्दील हो जाती है। राज्य में पूंजी निवेश का हल्ला मचा, हासिल कुछ नहीं हुआ। निवेशक सम्मेलन के नाम पर तामझाम, दावत, सत्कार में जितनी धनराशि फूंकी गई उतनी किसी उद्योग में नहीं लगी। भाजपा राज में उत्तर प्रदेश विकास की दौड़ में लगातार पिछड़ता जा रहा है।

शिक्षा-स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारी गिरावट है। कोरोना संक्रमण थम नहीं रहा है। कोरोना संकट काल में जो प्रवासी श्रमिक आए उनके लिए जो भी वादे किए गए, एक भी जमीन पर नहीं उतारे गए हैं। मजबूरन प्रवासी मजदूर दूसरे प्रदेशों में नौकरियां पाने के लिए फिर पलायन कर रहे हैं। सरकार के पास प्रवासी मजदूरों के सही आंकड़े भी नहीं है। फिर वह उनको कैसे राहत देंगे?

भाजपा सरकार को जनसामान्य के स्वास्थ्य और जीवन की भी कोई चिंता नहीं है। प्रदेश में अवैध शराब का कारोबार सत्ता के संरक्षण में चल रहा है। मुख्यमंत्री के बड़बोलेपन के बावजूद जहरीली शराब का धंधा दो गुनी रफ्तार से चल

भाजपा राज नारी पर भारी

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार के कार्यकाल में बेटियों का सम्मान पूर्वक जीना दुश्वार है। आए दिन उनके साथ होने वाले दुष्कर्म की घटनाओं पर कोई रोक नहीं लग रही है। खास तौर पर दलित समाज की बेटियों पर अत्याचार थमने का नाम नहीं ले रहा है। अराजकता का ऐसा तांडव पहले कभी नहीं देखा गया।

भाजपा सरकार का बहुप्रचारित रोमियो स्क्वाड लापता हैं। अब मुख्यमंत्री जिलों में मिशन शक्ति अभियान चलवा रहे हैं। इसका हश्र भी वही होना है जो अब तक उनके बाकी वादो-निर्देशों-आदेशों का होता रहा है। जब हालात इतने हृदयविदारक हों तब मुख्यमंत्री का नारी शक्ति की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलम्बन के लिए विशेष अभियान चलाने की बात करने का औचित्य क्या है?

महिलाओं के खिलाफ जिस प्रकार बलात्कार, यौन उत्पीड़न और छेड़खानी के मामले बढ़े हैं उससे हताशा और अवसाद में आकर कई बहन बेटियों को आत्महत्या को मजबूर होना पड़ा है। सरकार पिंक बूथ और मिशनशक्ति जैसे दिखावटी कार्यक्रमों में समय बिता रही हैं। समाजवादी सरकार ने अपराध नियंत्रण और महिला सुरक्षा के लिए 1090 वूमेन पावर लाइन और यूपी डायल 100 सेवा शुरू की थी। भाजपा ने उसे बर्बाद कर दिया क्योंकि उनकी शुरूआत समाजवादी सरकार ने की थी। ।

हाथरस में दलित बेटी की दुष्कर्म के बाद नृशंस हत्या के बाद आधी रात में पुलिस ने जबरन उसका दाह संस्कार कर दिया। घरवालों को उसका मुंह भी देखने नहीं दिया। मुख्यमंत्री एक

बेटी को गरिमापूर्ण जीवन तो दे नहीं सके उन्होंने

उसकी सम्मानजनक अंतिम विदाई भी छीन ली। रात्रि में रीति रिवाज के विपरीत दाह संस्कार और जलाने की जो प्रक्रिया अपनाई गई उससे अधिक शर्मनाक कोई बात नहीं हो सकती है। बाराबंकी में भी बच्ची की दुष्कर्म के बाद हत्या की गई। हाथरस, बलिया, झांसी, बलरामपुर और बाराबंकी जैसे कांडों का लंबा सिलसिला सा चल रहा है। इन सभी काण्डों में बच्चियों से दुष्कर्म के मामलों में पुलिस और प्रशासन की लीपापोती की ही नीति रही है।

दुर्भाग्य यह कि भाजपा सरकार में अपराधी को सत्ता का संरक्षण और अपराध को सामने लाने वाले पर केस दर्ज होने का अजीबोगरीब खेल चल रहा है। कानून व्यवस्था का यह नया रंग ढंग महिलाओं को निराशा में आत्महत्या करने को मजबूर कर रहा है। पिछड़े, दलित और महिलाओं में असुरक्षा की भावना गहरे से घर कर गई है और वे घर-बाहर भयाक्रांत रहती हैं। भाजपा राज के जंगलराज में महिला होना ही सबसे बड़ा अपराध हो गया है।

महाराष्ट्र पर ट्वीट कर लोकतंत्र की हत्या का बयान देने वाले यूपी के मुख्यमंत्री के राज में महिलाओं के खिलाफ अपराध रोकने और

अपराधी को पकड़ने के बजाय उसे उजागर करने वाले को ही पकड़ा जा रहा है। फतेहपुर में दो नाबालिग बहनों का शव मिलने पर मां का बयान टीवी चैनल पर चलाने के जुर्म में दो पत्रकारों पर मुकदमा दर्ज कर दिया गया है। भाजपा राज में विभिन्न कारणों से कई पत्रकारों के उत्पीड़न और हत्या तक की कई घटनाएं हो चुकी हैं।

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार के रहते बहन-बेटियों की सुरक्षा नहीं हो सकती है क्योंकि इस सरकार ने दरिंदो के सामने सरेंडर कर रखा है। बेटी अलग, मां अलग, शहर-गांव अलग लेकिन बेटियों का अंजाम वही। सत्ताधीशों का दिल भले न पिघले लेकिन सच्चाई यह है कि उत्तर प्रदेश 'बर्बर हत्या प्रदेश' में बदल गया है और खूनी खेल बेलगाम हो गया है।

रोज ही बच्चियां-युवतियां हैवानियत की शिकार हो रही हैं। बलात्कार और हत्याओं की फेहरिश्त ही दिल दहलाती है। भाजपा सरकार और उसकी पुलिस पर लोगों का भरोसा उठ रहा है इसलिए हाथरस काण्ड के पीड़ित अब यूपी में नहीं रहना चाहते हैं। वे अपने मुकदमें भी उत्तर प्रदेश से बाहर ले जाना चाहते हैं।

रहा है। अब तक दर्जनों लोग जहरीली शराब पीकर अपनी जान गंवा बैठे हैं। राजधानी लखनऊ तक में ऐसी घटना हुई। शराब माफियाओं के हौसले इतने बढ़े हुए हैं कि वे सरकारी कायदे कानूनों को ठेंगा दिखाते हुए तस्करी और अवैध शराब की बिक्री खुलेआम कर रहे हैं। सच तो यह है कि प्रदेश में पुलिस और आबकारी विभाग की जानकारी में ही अवैध ढंग से शराब की तस्करी और जहरीली शराब बनाने और बेचने का काम हो रहा है।

प्रदेश में खनन माफिया अपनी अलग ही सत्ता चला रहे हैं। सरकार के बड़े-बड़े नेताओं के संरक्षण में खनिज का काला धंधा चलता है। इस धंधे पर उंगली उठाते ही माफिया, सत्ताधीश और अफसरशाही का त्रिकोण सक्रिय हो जाता है। कई पत्रकार और राजनीतिक कार्यकर्ता इसमें अपनी जान गंवा बैठे हैं। भाजपा सरकार को याद रखना चाहिए कि जनता की आवाज को कुचलने का अहंकार जिसने पाला, उसे जनाक्रोश का सामना करना पड़ा है। डा॰ राम मनोहर लोहिया ने चेताया था कि जिन्दा कौमे पांच साल इंतजार नहीं करती है। जनता के सब्र का बांध टूटता है तो कुछ भी नहीं बचता है।

KIDS ETC.

अन्यायी और पक्षपाती सरकार

रविकान्त
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, लखनऊ विवि

देश का सबसे बड़ा और गौरवशाली राज्य उत्तर प्रदेश आज सबसे खराब दौर से गुजर रहा है। यहां की सरकार गूंगी और बहरी है। प्रशासन बेपरवाह और पुलिस निरंकुश है। आज यूपी में सरकार समर्थित गुंडों और अपराधियों का बोलबाला है। यूपी में रामराज्य है, कहने वाली योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश को जंगलराज में तब्दील कर दिया है।

राजधानी लखनऊ हो या प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में निरंतर होने वाली हत्याएं व बलात्कार की घटनाओं से सिद्ध होता है कि योगी सरकार कानून व्यवस्था के मोर्चे पर बिल्कुल विफल हो चुकी है। इसकी सबसे बड़ी वजह सरकार का अन्यायपूर्ण पक्षपाती रवैया है। सरकार अपने समर्थक कार्यकर्ताओं और पार्टी के नेताओं द्वारा किए जाने वाले शोषण और अन्याय को नजरअंदाज ही नहीं करती बल्कि उनका संरक्षण भी करती है। प्रदेश सरकार कानून से नहीं बल्कि एक व्यक्ति के मनमानेपन से चल रही है। यूपी में सरकार का मतलब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। योगी आदित्यनाथ अपनी टीम इलेवन के साथ काम करते हैं। उनकी निजी पसंद के आधार पर चुने हुए कुछ अधिकारियों के आगे सरकार के मंत्री और विधायक भी बेबस हैं। इस वजह से भी योगी सरकार चौतरफा नाकाम है।

किसी भी सरकार की सफलता मुख्य रूप से विकास कार्य और कानून व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन में निहित होती है। साढ़े तीन साल पूरे कर चुकी योगी सरकार विकास कार्य में सिफर

है। बिजनेस और इन्वेस्टर्स मीट के नाम पर करोड़ों रुपए बर्बाद करने के बावजूद यूपी में पर्याप्त निवेश भी नहीं हुआ है। इसलिए रोजगार सृजन में भी योगी सरकार पूर्णतः विफल हुई है। योगी से जब पूछा जाता है कि वे रोजगार देने में विफल क्यों हैं, तो वे कहते हैं कि यूपी में नौकरिया बहुत हैं लेकिन योग्य कंडीडेट ही नहीं हैं। यूपी के छात्रों और नौजवानों की योग्यता पर सवाल खड़ा करने वाला यह बयान आपत्तिजनक और निंदनीय है।

विकास के मोर्चे पर विफल योगी आदित्यनाथ को फीता काटने वाला मुख्यमंत्री कहा जाने लगा है। पिछली समाजवादी पार्टी की सरकार द्वारा संचालित किए गए कामों का उद्घाटन करके योगी सरकार बड़ी बेशर्मी से अपनी उपलब्धि के रूप में दर्ज कर रही है। लखनऊ की मेट्रो रेल परियोजना इसका बेहतरीन उदाहरण है। विभिन्न स्थानों और योजनाओं के नाम बदलना प्रदेश के मुखिया का

विकास के मोर्चे पर विफल योगी आदित्यनाथ को फीता काटने वाला मुख्यमंत्री कहा जाने लगा है। पिछली समाजवादी पार्टी की सरकार द्वारा संचालित किए गए कामों का उद्घाटन करके योगी सरकार बड़ी बेशर्मी से अपनी उपलब्धि के रूप में दर्ज कर रही है।

शगल बन चुका है। ऐसा करने के पीछे सरकार का न तो कोई विजन है और न ही वहां कोई विकास हुआ है। इसके अतिरिक्त पिछली समाजवादी पार्टी की सरकार में संपन्न कई बड़ी परियोजनाओं के नाम बदलकर योगी सरकार यूपी की जनता को गुमराह करना चाहती है। लखनऊ के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम से लेकर विधानसभा के सामने नवनिर्मित प्रशासनिक भवन आदि के नामकरण करके योगी सरकार इन्हें अपनी उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत कर रही है।

लोक कल्याणकारी योजनाएं प्रजातंत्र की पहचान होती हैं। अखिलेश यादव की सरकार में सीधे जनहित से जुड़ी लोक कल्याणकारी योजनाओं को योगी सरकार ने निष्क्रिय बना दिया है। इसका परिणाम आज पूरा प्रदेश भुगत रहा है। सरकार में आते ही अखिलेश यादव ने 14 सितंबर 2012 को डायल 108 समाजवादी स्वास्थ्य सेवा की शुरुआत की। इसके बाद विशेषकर गर्भवती महिलाओं को त्वरित एंबुलेंस सेवा उपलब्ध कराने के लिए 17 जनवरी 2014 को 102 नेशनल एंबुलेंस सर्विस लागू की गई। 2 अक्टूबर 2016 को अखिलेश सरकार ने डायल

100 सेवा शुरू हुई।

पुलिस सेवा की इस योजना से कानून व्यवस्था मजबूत हुई। पुलिस का इकबाल बढ़ा और लोगों में सुरक्षा भावना पैदा हुई। आज नेताओं और अन्य वीआईपी लोगों के लिए वाई और जेड श्रेणी की सुरक्षा पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं लेकिन आमजनता असुरक्षित है। अखिलेश सरकार की जनहित सेवाओं की खस्ता हालत आज किसी से छिपी नहीं है। इनके नाम और नंबर बदलकर योगी सरकार समाजवादी सरकार की नकल तो करना चाहती है लेकिन सच्चाई यह कि अगर नीयत और नीति साफ नहीं हो तो कोई भी योजना या तंत्र अपने आप विफल हो जाता है।

अखिलेश सरकार द्वारा शुरु की गई एक और सफल योजना थी, डायल 1090। महत्वपूर्ण यह है कि यूपीए सरकार के समय बहुचर्चित दिल्ली के निर्भया कांड से कुछ दिन पहले ही 15 नवंबर 2012 को अखिलेश यादव ने 1090 का शुभारंभ किया था। महिला उत्पीड़न के खिलाफ इस मुहिम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली। साथ ही यूपी की प्रत्येक लड़की को इससे हिम्मत प्राप्त हुई और अखिलेश यादव को सराहना। योगी ने इसके स्थान पर एंटी रोमियो स्क्वायड बनाया। इसका काम बजरंग दल और श्रीराम सेना की तरह लड़के और लड़कियों को धमकाना ज्यादा था, सुरक्षा का विश्वास कम।

योगी ने अपनी उग्र सांप्रदायिक राजनीति का यहां भी इस्तेमाल किया। इसके तहत कई बेकसूर दलित और मुस्लिम नौजवानों को पकड़कर जेल भेज दिया गया। यही कारण है कि यूपी से महिला उत्पीड़न और बलात्कार की घटनाओं पर रोक नहीं लग रही है। योगी सरकार ने सत्तारूढ़ पाले से जुड़े बलात्कार के आरोपियों पर नरमी ही नहीं बरती बल्कि कई दफा वह बलात्कारियों के समर्थन में आ गई। उसपर जातिवाद के आरोप

उत्तर प्रदेश में पिछले तीन साल से लगातार दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं लेकिन उन्हें न्याय नहीं मिल रहा है। ऐसा लगता कि बाबा साहब के संविधान से प्राप्त अधिकारों और अपने परिश्रम की बदौलत जो दलितों में चेतना और संपन्नता आई है उसे सत्ता के संरक्षण से उत्साहित सामंती मानसिकता वाले खत्म कर देना चाहते हैं।

भी लगते रहे हैं। उन्नाव के चर्चित बलात्कार कांड के आरोपी भाजपा विधायक कुलदीप सेंगर को योगी सरकार ने बहुत बचाने की कोशिश की। इसी तरह पूर्व गृहमंत्री स्वामी चिन्मयानंद पर बलात्कार के आरोप के मामले में भी पक्षपात के आरोप लगे। बहुचर्चित हाथरस बलात्कार केस में भी योगी सरकार की पुलिस दबंग आरोपियों को बचाने के लिए तत्पर दिखी। जबकि पीड़िता ने अपने बयान में सामूहिक बलात्कार और निर्ममतापूर्वक उसकी जीभ काटने और गर्दन की हड्डी तोड़ने की बात कही थी।

विपक्ष और मीडिया द्वारा हुई आलोचना को देखते हुए गुड़िया के शव को हाथरस पुलिस प्रशासन ने आधी रात के बाद जला दिया। इसके बाद कानून व्यवस्था का हवाला देकर धारा 144 लागू करके पुलिस द्वारा आंदोलन कर रहे सपा समेत अन्य विपक्षी दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं पर बर्बरतापूर्वक लाठियां बरसाई गईं। योगी सरकार यहीं तक नहीं रुकी। हाथरस डीएम दलित पीड़ित परिवार को धमकाने लगे। पीड़ित परिवार का नार्को टेस्ट कहने की बात होने लगी। विपक्ष के दबाव में सरकार ने एसआईटी का गठन करके मामले की जांच शुरू कर दी और उसके बाद सीबीआई जांच की भी केन्द्र सरकार से सिफारिश कर दी। बावजूद इसके पीड़ित परिवार को आज भी दबंगों और योगी सरकार पर भरोसा नहीं है।

उत्तर प्रदेश में पिछले तीन साल से लगातार दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं लेकिन उन्हें न्याय नहीं मिल रहा है। ऐसा लगता कि बाबा साहब के संविधान से प्राप्त अधिकारों और अपने परिश्रम की बदौलत जो दलितों में चेतना और संपन्नता आई है उसे सत्ता के संरक्षण से उत्साहित सामंती मानसिकता वाले खत्म कर देना चाहते हैं। इसीलिए सामंती दबंग दलित महिलाओं पर बलात्कार और हिंसा करके उनके शरीर ही नहीं बल्कि आत्मा को भी छलनी कर रहे हैं। चूंकि उन्हें राजनीतिक संरक्षण हासिल इसलिए उनमें कानून का कोई डर नहीं है। योगी सरकार पर जातिवाद के भी गंभीर आरोप लगते हैं।

प्रशासन में ऊंचे पदों से लेकर स्थानीय स्तर पर थानों में एक जाति के अधिकारियों-कर्मचारियों की बहुलता इसकी पुष्टि करती है। वहीं खुद भाजपा के ही ब्राह्मण नेताओं को शिकायत रहती है कि योगी आदित्यनाथ ब्राह्मणों की अनदेखी ही नहीं कर रहे हैं बल्कि उनके राज में ब्राह्मणों पर जुल्म भी हो रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में राज्य में बड़े पैमाने पर ब्राह्मणों की हत्या हुई है। कई

ऐसे एनकाउंटर हुए जिन्हें फर्जी ठहराते हुए ब्राह्मण समाज ने सवाल उठाए। इससे ब्राह्मण समाज में योगी आदित्यनाथ और भाजपा सरकार के खिलाफ बहुत नाराजगी है। यह घटनाएं दरअसल, योगी सरकार की 'ठोको नीति' का नतीजा हैं। प्रदेश के किसी न किसी हिस्से से प्रतिदिन बर्बर घटनाओं की खबर आती है। यूपी में अब न बहू-बेटियों की इज्जत-आबरू सलामत है और न किसी के जान-माल की सुरक्षा की गारण्टी है। पुलिस का कोई इकबाल यूपी में नहीं बचा है। योगी आदित्यनाथ सरकार ने यूपी को जंगलराज में तब्दील कर दिया है।

अराजकता, अन्याय, दमन और उत्पीड़न योगी सरकार के समय के मुहावरे बन चुके हैं। लोकतंत्र में विपक्ष का काम है, सत्ता को आईना दिखाना। लेकिन योगी आदित्यनाथ विपक्ष को नजरअंदाज ही नहीं करते बल्कि बर्बरतापूर्वक उसकी आवाज को दबाना चाहते हैं। हालिया हाथरस से लेकर पहले के तमाम आंदोलनों में भी योगी का दमनकारी रवैया जारी रहा है। अपने शहर गोरखपुर के जिला चिकित्सालय में जब आक्सीजन की कमी से सैकड़ों गरीब बच्चों की मौत हो गई तो बजाय अपनी गलती सुधारने के योगी ने डा. कफील को जेल भेज दिया। डा. कफील सरकार की नजरों में अपराधी इसलिए थे, क्योंकि उन्होंने सरकारी तंत्र के गैरजिम्मेदाराना रवैये पर सवाल उठाया था। कफील उस केस से छूटे तो योगी सरकार ने उन पर भड़काऊ भाषण देने का झूठा आरोप लगाकर फिर से जेल भेज दिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सरकार के इस कृत्य की आलोचना करते हुए डा. कफील को रिहा कर दिया है।

इसी तरह से योगी आदित्यनाथ ने सीएए और एनआरसी के विरोध में लोकतांत्रिक तरीके से विरोध करने वालों के साथ अमानवीय व्यवहार ही नहीं किया बल्कि उनके पोस्टर भी लखनऊ और अन्य शहरों में लगाए। यह व्यक्ति की गरिमा और निजता का उल्लंघन है। संविधान का अनुच्छेद 21 प्रत्येक नागरिक को इसकी गारंटी देता है। लेकिन ऐसा लगता है कि योगी सरकार संविधान और कानून, लोकतंत्र और विपक्ष, जन आंदोलन और मीडिया; किसी की परवाह नहीं करती। लोकतंत्र में जनता भगवान होती है। जनता की कोई चिंता योगी आदित्यनाथ सरकार को नहीं है और न उससे कोई हमदर्दी है। यही कारण है कि आज यूपी की जनता योगी और भाजपा सरकार से मुक्ति के लिए बेताब है।

भाजपा सरकार के खिलाफ जबरदस्त गुस्सा

हाथरस कांड

बुलेटिन ब्यूरो

हाथरस रेप व हत्या मामले के खिलाफ समाजवादी पार्टी ने मुखर विरोध दर्ज कराते हुए सरकार की नाकामी व घटना पर पर्दा डालने की उसकी कोशिशों का जबरदस्त विरोध किया। विरोध कर रहे कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने बर्बर लाठीचार्ज किया लेकिन समाजवादियों के हौसले पस्त नहीं हुए।

पूरे प्रदेश में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी जी के जन्मदिन पर हाथरस की पीड़िता के लिए इंसाफ, बदहाल कानून व्यवस्था, बेकारी, मंहगाई के मुद्दे पर दो घंटे मौन व्रत रखा गया। लखनऊ में प्रशासन और पुलिस ने मानवता को शर्मसार करते हुए हाथरस में दलित युवती के लिए न्याय की मांग करने के लिए गांधी जी की

महात्मा गांधी जी
राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी
दिन-दहाड़े बलात्कार
आधी-रात अंतिम संस्कार
आओ हटायें कलजुगी सरकार

अखिलेश यादव

प्रतिमा पर मौन व्रत सत्याग्रह करने के लिए जाते हुए समाजवादी नेताओं, विधायकों और कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने अकारण बर्बरता से लाठियां बरसाईं। शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं-महिलाओं तक को घसीटा गया। पुलिस की पिटाई से दर्जनों कार्यकर्ता, महिलाएं बुरी तरह घायल हुए।

उत्तर प्रदेश के लोकतांत्रिक इतिहास में गांधी जयंती पर पुलिस के ऐसे तांडव का दूसरा उदाहरण नहीं। राजधानी के सभी मुख्य मार्ग बैरिकेडिंग कर बंद कर दिए गए थे। गांधी जी की प्रतिमा पर अकेले माल्यार्पण करने के लिए जाने वालों को भी रोक दिया गया। भाजपा राज में गांधी जी की जयंती पर ऐसी हिंसा इतिहास की एक कलंकपूर्ण घटना के रूप में दर्ज रहेगी। दरअसल भाजपा का स्वतंत्रता आंदोलन और गांधी जी से कभी कोई लेना देना नहीं रहा। इसलिए भाजपा सरकार ने जो किया वह गांधी जी के विचारों की हत्या के साथ लोकतंत्र की भी हत्या कही जाएगी।

लखनऊ में जीपीओ स्थित गांधी जी की प्रतिमा पर मौन व्रत सत्याग्रह के पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार आज समाजवादी पार्टी के विधायक प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ में एकत्र हुए। उन्होंने सर्व प्रथम गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी के चित्रों पर माल्यार्पण किया। फिर वे एक साथ हजरतगंज गांधी जी के प्रतिमा स्थल की ओर रवाना हुए पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की। पुलिस सुबह से ही दफ्तर के बाहर भी तैनात थी। नेता विरोधी दल श्री रामगोविन्द चौधरी और प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने कहा कि वे शांतिपूर्ण ढंग से गांधी जी के प्रतिमा स्थल पर मौन व्रत सत्याग्रह करेंगे लेकिन पुलिस अधिकारियों ने उन्हें आगे बढ़ने से रोका। सभी विधायक गौतमपल्ली थाने के नजदीक सड़क पर धरना देकर बैठ गए तो पुलिस ने श्री रामगोविन्द चौधरी और प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल के साथ महबूब अली, इकबाल अहमद, रामसुन्दर दास निषाद, शैलेन्द्र यादव ललई,

प्रतिमा पर मौन व्रत सत्याग्रह करने के लिए जाते हुए समाजवादी नेताओं, विधायकों और

भाजपा राज में गांधी जी की जयंती पर ऐसी हिंसा इतिहास की एक कलंकपूर्ण घटना के रूप में दर्ज रहेगी। दरअसल भाजपा का स्वतंत्रता आंदोलन और गांधी जी से कभी कोई लेना देना नहीं रहा। इसलिए भाजपा सरकार ने जो किया वह गांधी जी के विचारों की हत्या के साथ लोकतंत्र की भी हत्या कही जाएगी।

कार्यकर्ताओं पर पुलिस ने अकारण बर्बरता से लाठियां बरसाईं। शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं-महिलाओं तक को घसीटा गया। पुलिस की पिटाई से दर्जनों कार्यकर्ता, महिलाएं बुरी तरह घायल हुए।

उत्तर प्रदेश के लोकतांत्रिक इतिहास में गांधी जयंती पर पुलिस के ऐसे तांडव का दूसरा उदाहरण नहीं। राजधानी के सभी मुख्य मार्ग बैरिकेडिंग कर बंद कर दिए गए थे। गांधी जी की प्रतिमा पर अकेले माल्यार्पण करने के लिए जाने वालों को भी रोक दिया गया। भाजपा राज में गांधी जी की जयंती पर ऐसी हिंसा इतिहास की एक कलंकपूर्ण घटना के रूप में दर्ज रहेगी। दरअसल भाजपा का स्वतंत्रता आंदोलन और गांधी जी से कभी कोई लेना देना नहीं रहा। इसलिए भाजपा सरकार ने जो किया वह गांधी जी के विचारों की हत्या के साथ लोकतंत्र की भी हत्या कही जाएगी।

लखनऊ में जीपीओ स्थित गांधी जी की प्रतिमा पर मौन व्रत सत्याग्रह के पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार आज समाजवादी पार्टी के विधायक प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ में एकत्र हुए। उन्होंने सर्व प्रथम गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी के चित्रों पर माल्यार्पण किया। फिर वे एक साथ हजरतगंज गांधी जी के प्रतिमा स्थल की ओर रवाना हुए पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की। पुलिस सुबह से ही दफ्तर के बाहर भी तैनात थी। नेता विरोधी दल श्री रामगोविन्द चौधरी और प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने कहा कि वे शांतिपूर्ण ढंग से गांधी जी के प्रतिमा स्थल पर मौन व्रत सत्याग्रह करेंगे लेकिन पुलिस अधिकारियों ने उन्हें आगे बढ़ने से रोका। सभी विधायक गौतमपल्ली थाने के नजदीक सड़क पर धरना देकर बैठ गए तो पुलिस ने श्री रामगोविन्द चौधरी और प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल के साथ महबूब अली, इकबाल अहमद, रामसुन्दर दास निषाद, शैलेन्द्र यादव ललई,
अरविन्द कुमार सिंह, संजय गर्ग, डा॰ संग्राम सिंह यादव, रफीक अंसारी, राजकुमार यादव राजू, बृजेश कुमार कठेरिया, अम्बरीष पुष्कर, डा॰ मनोज पाण्डेय, राकेश प्रताप सिंह, अनिल कुमार दोहरे, इरफान सोलंकी, अमिताभ

पीड़ित परिवारों से मिला सपा का प्रतिनिधिमंडल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर हाथरस जनपद के बूलगढ़ी गांव में पीड़िता के परिवार से समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल ने भेंट की और संवेदना जताई। समाजवादी पार्टी के नेताओं ने पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया।

समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल में प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामजी लाल सुमन, पूर्व सांसद धर्मेन्द्र यादव व अक्षय यादव व विधानपरिषद सदस्य जसवंत यादव, संजय लाठर, उदयवीर सिंह एवं अन्य नेता शामिल थे।

वहीं समाजवादी पार्टी के तीन अलग-अलग प्रतिनिधिमण्डलों ने वाराणसी, भदोही और बलरामपुर में रेप पीड़िताओं के परिवारीजनों से मिलकर घटनाक्रम की जानकारी ली और उन्हें सांत्वना दी। पीड़ित परिवारों ने मांग की कि दोषी व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। समाजवादी पार्टी ने उनके लिए न्याय की लड़ाई में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

वाराणसी के प्रतिनिधिमंडल में श्रीमती बाजपेयी, उज्जवल रमण सिंह, संतोष यादव सनी, आनन्द भदौरिया, सुनील सिंह साजन, उदयवीर सिंह, धर्मराज सिंह यादव उर्फ सुरेश यादव, जगदीश सोनकर, वीरेन्द्र कुमार यादव, जगजीवन प्रसाद, गौरव रावत, सुभाष राय, रामजतन राजभर, रामवृक्ष यादव, श्रीमती लीलावती कुशवाहा, जितेन्द्र यादव, दिलीप यादव, अरविन्द प्रताप यादव, दिलीप सिंह उर्फ कल्लू यादव, वासुदेव यादव, हीरा लाल यादव, शैलेन्द्र प्रताप सिंह, मिस्बाहुद्दीन, शशांक यादव, एवं अमित यादव आदि विधायकों को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने सड़क पर महिलाओं तक को बुरी तरह घसीटा जिससे कई घायल हो गईं। युवाओं पर निर्ममता से लाठियां बरसाई गई। पुलिस ने बर्बरता की सारे हदें पार कर दीं।

उधर जीपीओ पार्क स्थित गांधी जी की प्रतिमा तक जाने से रोके जाने पर समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता हजरतगंज में विरोध प्रदर्शन करने लगे। पुलिस ने सड़क पर महिलाओं तक को बुरी तरह घसीटा जिससे कई घायल हो गईं। युवाओं पर निर्ममता से लाठियां बरसाई गई। पुलिस ने बर्बरता की सारे हदें पार कर दीं। श्री अनुराग भदौरिया को पुलिस की पिटाई से चोटें आईं।

इसके एक दिन पहले समाजवादी युवाओं द्वारा

शालिनी यादव, मनोज राय 'धूपचण्डी', आदि शामिल थे। जनपद बलरामपुर के ग्राम पंचायत मझौली ब्लाक गैसड़ी तहसील तुलसीपुर में गैंगरेप पीड़िता के शोकग्रस्त परिवार से पूर्व मंत्री श्री विनोद कुमार सिंह उर्फ पण्डित सिंह एवं पूर्व मंत्री श्री एस.पी. यादव के साथ पूर्व विधायक जगराम पासवान एवं अब्दुल मसूद आदि शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की ओर से परिवार को एक लाख रुपए की नगद आर्थिक मदद भी दी।

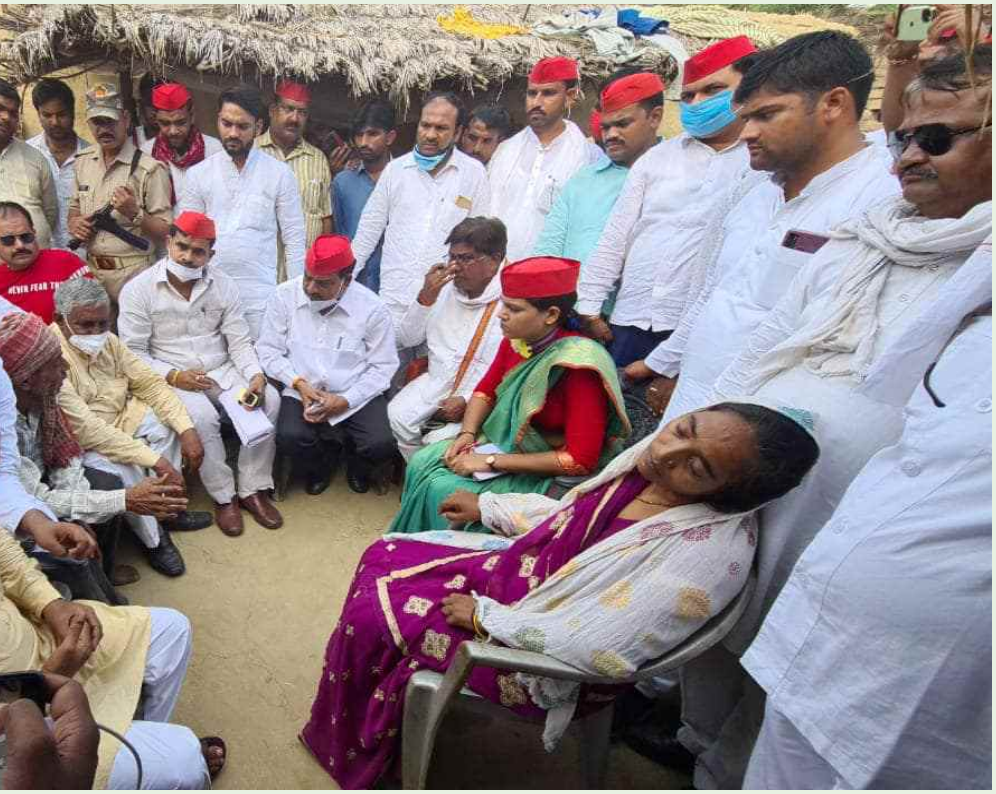

जनपद भदोही के थाना गोपीगंज के अंतर्गत ग्राम तिवारीपुर में दलित नाबालिग बेटी के साथ गैंगरेप के मामले में समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल ने पीड़िता के परिवारीजनों से मुलाकात की और उन्हें न्याय दिलाने का आश्वासन दिया।

लखनऊ में विरोध प्रदर्शन पर भी पुलिस का कहर टूटा था। पुलिस की पिटाई से कई युवा नेता बुरी तरह घायल हो गए थे। राजधानी लखनऊ में 1090 वूमेन पावर लाइन चौराहा और विधान भवन के सामने हाथरस की घटना और प्रदेश में कानून व्यवस्था के ध्वस्त होने के विरोध में समाजवादी नौजवानों ने विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन कर रहे युवाओं पर पुलिस ने लाठी भांजी और गिरफ्तारी की। उन्हें बाद में जेल भेज दिया गया। गिरफ्तार युवा नेताओं में समाजवादी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय सिंह, समाजवादी यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष अनीस राजा, समाजवादी युवजन सभा के प्रदेश अध्यक्ष अरविन्द गिरि समेत बड़ी संख्या में युवा कार्यकर्ता शामिल थे।

उधर हाथरस में पीड़िता के गांव जाकर उसके परिवारीजनों से मिलने और उन्हें सांत्वना देने जा रहे समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल को भी पुलिस ने बल पूर्वक रोक दिया और लाठीचार्ज किया। समाजवादी नेताओं को चंदपा थाने में गिरफ्तार कर ले जाया गया। प्रतिनिधिमण्डल में विधान परिषद सदस्य जसवन्त सिंह यादव, अतुल प्रधान, सर्वेश अम्बेडकर, विनोद सविता, डा॰ राम करन निर्मल, जुगुल किशोर बाल्मीकि, देवेन्द्र अग्रवाल , जैनुद्दीन चौधरी, गिरीश यादव एवं राकेश सिंह पूर्व विधायक प्रमुख थे।

उत्तर प्रदेश में संवैधानिक संकट के हालात

कानून-व्यवस्था पर राज्यपाल को ज्ञापन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर जनपदों में समाजवादी पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं ने प्रदेश में लगातार बिगड़ती कानून-व्यवस्था पर महामहिम राज्यपाल जी को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारियों को सौंपा। ज्ञापन में प्रदेश में अनियंत्रित अपराध स्थिति का विवरण देते हुए कहा गया है कि हर दिन मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाएं हो रही है। सरकार हर मोर्चे पर विफल है। लोकतंत्र की हत्या हो रही है। प्रदेश में संवैधानिक संकट की स्थिति है। विकास अवरूद्ध है। जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। राज्यपाल जी से आशा की गई है कि वे अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगी।

ज्ञापन में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति अत्यंत गंभीर है। हत्या, लूट, अपहरण, बलात्कार की घटनाएं रोज ही घट रही है और प्रदेश की भाजपा सरकार इस पर नियंत्रण पाने में पूर्णतया विफल है। प्रदेश में बेलगाम अपराध और बेखौफ अपराधी सत्ता संरक्षण में पल रहे हैं। जनता अपने को असुरक्षित मान रही है। चारों तरफ भय और आतंक का माहौल है।

ज्ञापन में कहा गया है कि भाजपा राज में सर्वाधिक असुरक्षित महिलाएं एवं बच्चियां हैं। महिलाओं के साथ 2017 में 56011, वर्ष 2018 में 59445, वर्ष 2019 में 59853 अपराध हुए हैं। राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो की रिपोर्ट

राष्ट्र पिता

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी
महात्मा गांधी जी

के अनुसार पूरे भारत में अपराधों के सापेक्ष 14.3 प्रतिशत अपराध संख्या उत्तर प्रदेश में होने से उसे अपराधों के मामले में प्रथम स्थान प्राप्त होता है।

ध्वस्त कानून व्यवस्था का आलम तो यह है कि बलिया में राशन दूकान के आवंटन की पंचायत में हुए विवाद में भाजपा नेता ने दिनदहाड़े एक युवक को गोली मार दी। इस समय एसडीएम और सीओ भी मौजूद थे। पुलिस की पकड़ में आने के बाद भी आरोपी को भाग जाने दिया गया। बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाओं से सभी लोग विचलित हैं। प्रदेश में किसी भी अपराधी को अपराध करने में जरा भी संकोच या शर्म नहीं होती है क्योंकि उसे सत्ता का संरक्षण मिलने का भरोसा होता है।

यह विडम्बना है कि भाजपा सरकार दलितों, वंचितों और समाज के कमजोर वर्गों के हितों की पूर्णतया अनदेखी कर रही है। हाथरस में दलित बेटी के साथ दुष्कर्म और उसकी नृशंस हत्या के बाद आधी रात को पुलिस ने उसका शव जला दिया। पुलिस-प्रशासन का यह रवैया भी अत्यंत शर्मनाक रहा है। कई किशोरियों ने रेप की घटनाओं के बाद ग्लानि में आत्मदाह कर जान दे दी।

न केवल हाथरस अपितु बलरामपुर, आजमगढ़, बुलन्दशहर, भदोही, लखनऊ, बाराबंकी, बागपत, मेरठ, फतेहपुर, अलीगढ़, उन्नाव, लखीमपुर खीरी, मथुरा, महाराजगंज, प्रयागराज और पीलीभीत में भी हैवानियत की घटनाओं से प्रदेश की बदनामी हुई है। पुलिस की लीपापोती और अपराधियों को सत्ता द्वारा संरक्षण से कानून मानने वाले नागरिक विचलित हैं।

भाजपा सरकार के कार्यव्यवहार से प्रदेश में हर तरफ आक्रोश है। नागरिक अपने जानमाल की सुरक्षा के लिए हर क्षण चिंतित रहते हैं। महिलाओं की जिंदगी असुरक्षित है। जनधन की सुरक्षा जैसी कोई चीज नज़र नहीं आती है। हर दिन मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाएं हो रही हैं।

निश्चित रूप से प्रदेश में संवैधानिक संकट की स्थिति है। सत्तारूढ़ सरकार ध्वस्त कानून व्यवस्था को सम्हालने में पूरी तरह विफल है। प्रदेश में विकास अवरूद्ध है। जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। इन स्थितियों में गम्भीर प्रश्न है कि जनधन की सुरक्षा मिलेगी या नहीं? जनता की सुरक्षा का क्या होगा? प्रदेश में संवैधानिक मर्यादा का पालन होगा या नहीं?

आजम साहब
की रिहाई की बाट जोह रहे समाजवादी

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री आजम खान एवं उनके परिवारजनों को अपमानित करने और यातना देने के लिए झूठे केसों में फंसाने के पीछे समाजवादियों के हौसलों को पस्त करने की साजिश नाकाम हो रही है।

आजम साहब एवं उनके परिवारजनों पर फर्जी तरीके से लादे गए करीब नब्बे मामलों में से अधिकांश में माननीय न्यायालय ने जमानत मंजूर कर दी है। लिहाजा समाजवादी लोग बड़ी बेसब्री से आजम साहब की रिहाई की बाट जोह

रहे हैं। उन्हें देश के संविधान एवं न्याय प्रणाली पर पूरा विश्वास है कि इंसाफ जरूर होगा।

ज्ञातव्य है कि राजनीतिक द्वेष में भाजपा सरकार ने श्री आजम खान, उनकी पत्नी डाॅ तंजीन फातिमा एवं पुत्र अब्दुल्ला आजम के खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज कर उन्हें जेल में बंद कर रखा है। श्री आजम खान प्रदेश के प्रतिष्ठित राजनेता हैं। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं। इस समय वह रामपुर से लोकसभा के सदस्य हैं। मौलाना मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय जैसा उच्च शैक्षणिक संस्थान उन्हीं की देन है।

ऐसी शख्सियत के खिलाफ सत्तारूढ़ पार्टी के कहने पर पुलिस-प्रशासन द्वारा की जा रही इस मनमानी कार्रवाई के खिलाफ समाजवादी पार्टी लगातार मुखर रही है। खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने गिरफ्तारी के मुद्दे पर लगातार सरकार को घेरा है। इन तीनों को जब रामपुर जेल से सीतापुर जेल स्थानांतरित किया गया तो अखिलेश जी तत्काल सीतापुर रवाना हो गए व कारागार में आजम साहब व उनकी पत्नी व पुत्र से मुलाकात की व उन्हें अपने एवं पार्टी के समर्थन का भरोसा दिलाया।

इधर कानूनी मामलों के जानकारों के मुताबिक चूंकि दर्ज 90 मामलों में से अब तक 86 मामलों में उन्हें जमानत मिल चुकी है ऐसे में माना जा रहा है कि बाकी जमानत मिलते ही श्री आजम खान अपने परिवार के साथ रिहा हो जाएंगे। छजलैट मामले में भी श्री आजम खान को एमपी-एमएलए की विशेष अदालत में सुनवाई के बाद जमानत मिल गई है। आजम साहब और उनके बेटे पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम खान की तीन जमानत अर्जियों पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी हो गई है। कोर्ट ने इन मामलों पर अपना निर्णय सुरक्षित रखा है।

अब्दुल्ला आजम खान की विधानसभा सदस्यता रद्द करने के हाई कोर्ट के निर्णय पर सुप्रीम कोर्ट ने

राजनीतिक द्वेष में भाजपा सरकार ने श्री आजम खान, उनकी पत्नी डॉ तंजीन फातिमा एवं पुत्र अब्दुल्ला आजम के खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज कर उन्हें जेल में बंद कर रखा है। श्री आजम खान प्रदेश के प्रतिष्ठित राजनेता हैं। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं।

रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश पर अंतरिम रोक लगा दी है, जिसमें हाईकोर्ट ने स्वार विधानसभा सीट पर उपचुनाव कराने का आदेश दिया था। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रामपुर की स्वार विधानसभा सीट पर अब्दुल्ला आजम के चुनाव को रद्द करते हुए वहां उप चुनाव चुनाव कराने का आदेश जारी किया था। श्री अब्दुल्ला ने इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। दरअसल, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रामपुर की स्वार सीट से विधायक अब्दुल्ला आजम की विधायकी 25 साल से कम उम्र मानते हुए रद्द कर दी थी। इस फैसले के खिलाफ उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

दूसरी ओर रामपुर में पुलिस-प्रशासन द्वारा मुकदमे दर्ज कराने में मनमानी के संकेत भी दिखने लगे हैं। रामपुर के डूंगरपुर में कथित तौर पर मकान तोड़ने और लूटपाट करने के मुकदमों में पुलिस ने श्री आजम खान के करीबी माने जाने वालों को जेल भेजा था। वह अब जमानत पर बाहर आने लगे हैं। श्री आजम खान खुद भी मानते हैं कि अंतत: जीत सच्चाई की होगी।

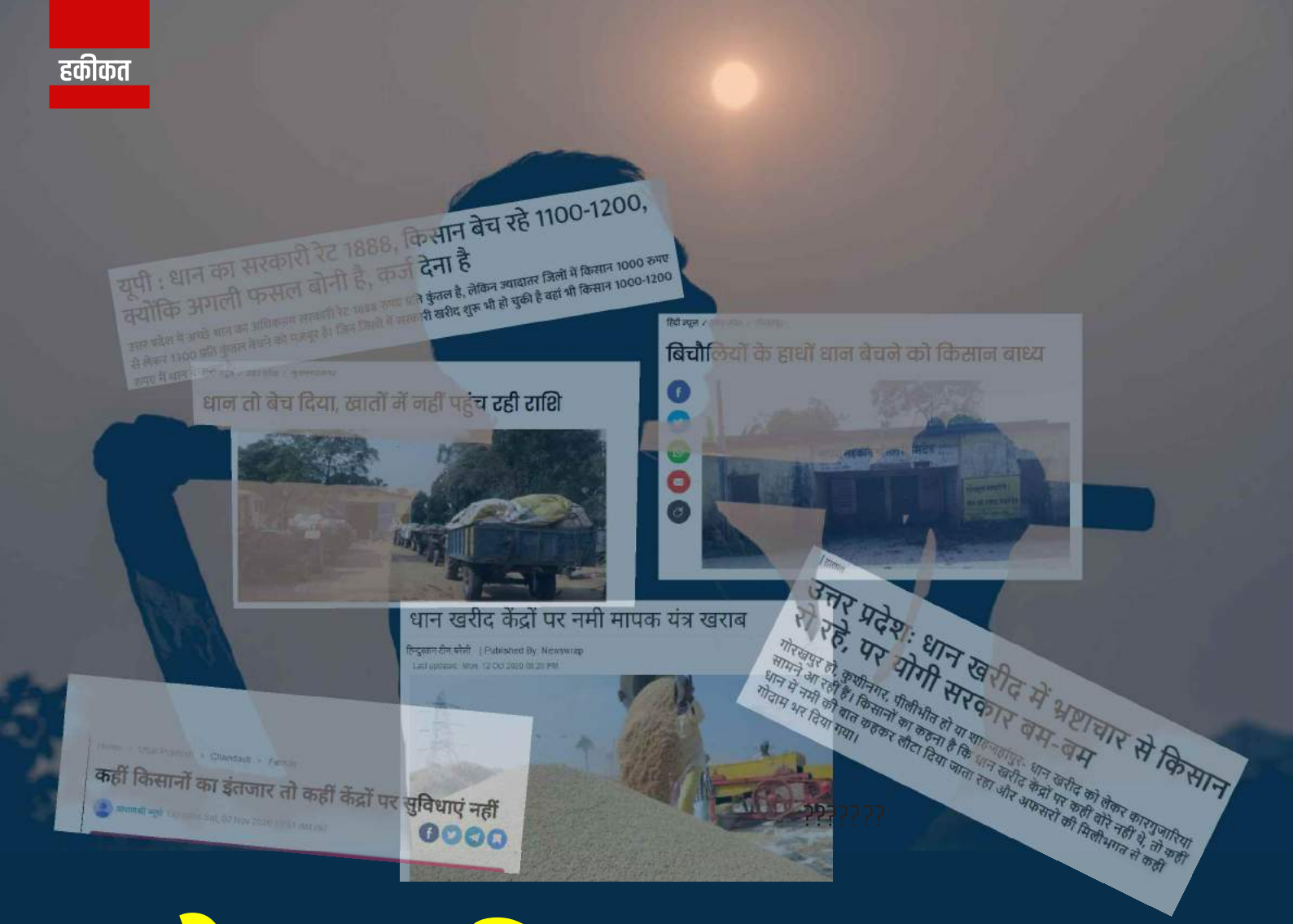

बेहाल किसान

धान खरीद में गड़बड़ियों का बोलबाला

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार की कुनीतियों के कारण किसान घोर संकट में है। किसान की फसल की खुलेआम लूट हो रही है। किसानों के लिए की गई तमाम घोषणाएं फाइलों में धूल खा रही हैं।जब कृषि अध्यादेशों को अधिनियम बनाया जा रहा था तभी यह आशंका थी कि इससे किसानों का ज्यादा अहित होगा। किसान को न्यूनतम समर्थन मूल्य से वंचित होना पड़ेगा।

उत्तर प्रदेश में धान खरीद की शुरुआत के साथ किसानों की तबाही के दिन शुरू हो गए। किसानों के प्रति भाजपा सरकार का संवेदनहीन रवैया धान खरीद में भी बरकरार रहा है। धान की खरीद में भ्रष्टाचार के चलते किसान बदहाली में है और सरकार उसके प्रति संवेदनाशून्य। बेमौसम बरसात में खेतों में तैयार और खलिहान में पड़ी धान की काफी फसल खराब हो गई। तिलहनी फसलों को भी नुकसान हुआ है। कई स्थानों पर धान क्रय केन्द्रों के बाहर खुले में रखा धान भी भीगकर खराब हो गया लेकिन सरकार ने कोई राहत नहीं दी। अलबत्ता पराली जलाने को लेकर किसानों का अभूतपूर्व उत्पीड़न जरूर हुआ।

पराली के नाम पर किसानों को जेल में डालने वाली सरकार धान की कीमत देने में विफल रही। बिचौलिए किसान का हक मारकर अपनी जेबें भरते रहे। भाजपा सरकार के नए कृषि अधिनियम से किसानों को हो रहे नुकसान का अब खुलासा हो रहा है।

धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1888 रुपए प्रति कुंतल तय हुआ, लेकिन बाजार में उसे हजार, बारह सौ रुपये में ही धान बेचना पड़ा। धान क्रय केन्द्रों पर किसान को अपमानित किया जाता है। धान की खरीद में कई बाधाएं डाली जाती हैं। जबकि किसान को बाजार से मंहगा डीजल, खाद, कीट नाशक, खेती के उपकरणों की खरीद करनी पड़ती है। कई जगह तो कागजों पर धान क्रय केन्द्र चल रहे हैं।

भाजपा राज में एक अक्टूबर 2020 से डीएपी खाद पर 50 रुपये और एन.पी.के. खाद पर 78 रुपये प्रति बोरी दाम बढ़ाकर पहले ही त्रस्त किसानों पर और अधिक बोझ डाला गया। उससे सरकारी देयों की वसूली बेरहमी से की जा रही है। इतना ही नहीं आसानी से बैंकों से कर्ज नहीं मिल रहा है। मजबूरन उसे साहूकार के चंगुल में फंसना पड़ता है। जब वह सब तरफ से निराश, हताश हो जाता है तो अवसाद का शिकार होता है।

पराली के नाम पर किसानों को जेल में डालने वाली सरकार धान की कीमत देने में विफल रही। बिचौलिए किसान का हक मारकर अपनी जेबें भरते रहे। भाजपा सरकार के नए कृषि अधिनियम से किसानों को हो रहे नुकसान का अब खुलासा हो रहा है।

सरकार धान की कागजी खरीद के आंकड़े पेश कर अपनी वाहवाही करती रहती है। हकीकत यह है कि बहुत जगहों पर धान क्रय केंद्र खुले ही नहीं। केंद्रों में अव्यवस्था छाई रही। किसानों की फसल की न तो समय से तौल हुई और न ही भुगतान। जिसका फायदा आसपास सक्रिय बिचौलिए या व्यापारी उठा रहे हैं। जिनमें सत्तारूढ़ दल के भी लोग सक्रिय हैं।

चीनी मिलों को नए पेराई सत्र से पहले पिछले बकाया का भुगतान करना था लेकिन अभी भी राज्य के गन्ना किसानों का लगभग 10 हजार करोड़ बकाया है। किसान की आमदनी दुगनी करने, फसल की लागत का ड्योढ़ा मूल्य देने में भाजपा सरकार को तकलीफ है जबकि गरीबों की सब्सिडी छीनने वाली भाजपा सरकार ने कई सौ करोड़ रुपये लोकलुभावन विज्ञापनों पर खर्च कर दिए है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भाजपा किसान के बजाय कारपोरेट घरानों का पोषण करती है। पराली जलाने के आरोप में हजारों किसानों के खिलाफ मुकदमों की नोटिसें जारी

हुई हैं। किसान की पराली के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था भाजपा सरकार ने नहीं की। किसान फिर अपनी अगली फसल की बुवाई के लिए खेत कैसे तैयार करे। तमाम परेशानियों से जूझ रहे किसान कहीं कोई उम्मीद न देखकर अंततः आत्महत्या को मजबूर हो जाता हैं। पराली प्रबंधन की जो बातें है भी वे हवा में की जा रही हैं।

भाजपा सरकार अन्नदाता किसान के साथ कई तरह के छल कपट करने की रणनीति बनाने में व्यस्त है। किसानों के खेत छीनने की मंशा के साथ प्रधानमंत्री ने अब उसे 'उद्यमी' बनाने की ओर प्रयास करने की साजिश की ओर भी इशारा कर दिया है। इसका सीधा अर्थ है कि भाजपा सरकार अब किसानों को भी आयकर के दायरे में लाना चाहती है। किसान को अभी तक मिलने वाले लाभों को शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाएगा। जबकि किसान को अन्नदाता की श्रेणी में रहने दिया जाए। लेकिन कृषि को उद्योगों जैसी सुविधाएं मिलनी चाहिए। कृषि से सम्बन्धित तीनों कानून किसानों के हितों के विरूद्ध है। इसके खिलाफ किसानों में व्यापक आक्रोश है। उसकी योजना अन्नदाता को खेतिहर मजदूर बना देने की है। किसान की खेती कारपोरेट को सौंप दी जाएगी। उसकी फसल का सौदा भी अब बड़े एजेण्टों, व्यापारियों की मर्जी पर होगा।

वास्तव में भाजपा सरकार किसानों के साथ सिर्फ छलावा करती आई हैं। जबकि जीडीपी में वृद्धि और रोजगार की उपलब्धता भी किसान से जुड़ी है। लाकडाउन के दौर में अर्थव्यवस्था में जो भारी गिरावट आई है उसके उद्धार में भी कृषि क्षेत्र

की महत्वपूर्ण भूमिका आंकी गई है। भाजपा सरकार किसान को राहत देने, उसका कर्जमाफ करने, उसकी सभी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) सुनिश्चित कराने, गन्ना किसानों का बकाया समय से दिलाने आदि के मामलों में पूरी तरह निष्क्रिय नज़र आ रही है। जहां किसानों की जमीन का अधिग्रहण हुआ वहां उन्हें समय से 6 गुना लाभप्रद मुआवजा भी नहीं मिला।सच यह है कि भाजपा सरकार जनता को सिर्फ परेशान करना जानती है।

काम बोलता है

पराया काम अपना !

बुलेटिन ब्यूरो

प्रदेश के विकास में फिसड्डी भाजपा सरकार 'पराया काम अपना' बताने की नीति पर चल रही है। समाजवादी सरकार में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की विकासपरक दूरदर्शी नीतियों के तहत बनीं परियोजनाओं को भाजपा सरकार अपना बताते हुए फीता काटने की शर्मनाक हरकत पर उतर आई है।

वस्तुतः भाजपा के पास कोई योजना नहीं होने से इसका नेतृत्व हताशा में डूब गया है। मुख्यमंत्री महोदय ने यह फार्मूला अपना रखा है कि 'जनता के नाम जो समाजवादी पार्टी का काम, बस उसे कर लेना है अपने नाम।' समाजवादी सरकार ने कैंसर अस्पताल बनवाया। भाजपा सरकार बने चार साल होने को हैं लेकिन सरकार सोई रही। अब जब विदाई की बेला आ गई है तो मुख्यमंत्री महोदय और रक्षा मंत्री जी, जो लखनऊ के सांसद भी हैं, ने समाजवादी सरकार के काम पर अपने नाम का पत्थर लगवा दिया, लेकिन उत्तर प्रदेश जनता की याददाश्त इतनी खराब नही कि वह साढ़े तीन साल में ही कैंसर अस्पताल के निर्माणकर्ता का नाम भूल जाए।

सुपर स्पेशलिटी कैंसर इंस्टीट्यूट एण्ड हास्पिटल का लोकार्पण वास्तव में समाजवादी सरकार के समय हो चुका था। अब उसी का पुनः लोकार्पण भाजपा सरकार में कर दिया गया। यह सरकार साढ़े तीन वर्ष में सिर्फ ओपीड़ी चालू कर सकी है। उत्तर प्रदेश की जनता के लिए समाजवादी सरकार के जनहितकारी कामों में लखनऊ का कैंसर अस्पताल भी एक मील का पत्थर है लेकिन भाजपा सरकार लगता है सिर्फ समाजवादी पार्टी की सरकार के कामों का फीता काटने के लिए ही बनी है।

इस प्रपंची भाजपा सरकार जैसी कोई सरकार प्रदेश की जनता ने नहीं देखी है। इतना कृतघ्न नेतृत्व भी भाजपा के अलावा दूसरा नहीं जो समाजवादी सरकार के विकास कार्यों के लिए उसको श्रेय नहीं देना चाहता है। समाजवादी सरकार ने कैंसर के अलावा गम्भीर बीमारियों

दिल, किडनी, लीवर के मुफ्त इलाज की भी अस्पतालों में व्यवस्था की थी। कैंसर की बीमारी का इलाज काफी मंहगा होता है। पीड़ित मरीजों को मुम्बई, दिल्ली, और दूसरे राज्यों में जाना होता है।

लखनऊ में कैंसर अस्पताल को भाजपा सरकार ने क्यों नहीं बीते साढ़े तीन साल में चालू किया? अगर पहले चालू कर देते तो न केवल प्रदेश अपितु पड़ोसी राज्य बिहार और नेपाल तक के कैंसर पीड़ितों को इलाज की सुविधा मिल जाती।

भाजपा सरकार ने 'सपा का काम अपने नाम' की आदत का हास्यास्पद प्रदर्शन करते हुए 20 अक्टूबर 2020 को सीजी सिटी स्थित कैंसर अस्पताल के लोकार्पण का लोकार्पण कर दिया। जबकि कैंसर इंस्टीट्यूट का शिलान्यास वर्ष 2013 में समाजवादी सरकार ने किया था और 20 दिसम्बर 2016 को इसका लोकार्पण भी किया गया। इस मौके पर कैंसर अस्पताल के निर्माण के लिए वे पूर्व सरकार का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण भी नहीं कर सके। यह कौन सी नैतिकता है? हकीकत यह है कि भाजपा सरकार ने साढ़े तीन वर्षों तक कैंसर अस्पताल में मरीजो का इलाज ही नही होने दिया। चौथे वर्ष में ओपीडी का काम शुरू किया। सबका साथ सबका विकास का नारा देने वाली भाजपा सरकार ने अगर पहले यह शुरू करा दिया होता तो कितने ही मरीजों का इलाज हो जाता। मुख्यमंत्री महोदय में संवेदनशीलता होती तो वे साढ़े तीन सालों में यहां इलाज न पाने वाले कैंसर मरीजों की मौतों का प्रायश्चित अवश्य करते।

उत्तर प्रदेश की जनता के लिए समाजवादी सरकार के जनहितकारी कामों में लखनऊ का कैंसर अस्पताल भी एक मील का पत्थर है लेकिन भाजपा सरकार लगता है सिर्फ समाजवादी पार्टी की सरकार के कामों का फीता काटने के लिए ही बनी है।

समाजवादी सरकार ने 1090 को नारी शक्ति की सुरक्षा का कवच बनाया था। भाजपा ने उसको निष्प्रभावी बना दिया। 108 सेवा समाजवादियों द्वारा दी गई संजीवनी थी जिसके विस्तार को रोक दिया गया। यूपी डायल 100 का नाम 112 रखकर भाजपा सरकार ने कौन सा कमाल कर दिया बंद हो चुकी 181 में कार्यरत महिलाओं को आज भी वेतन के लिए गुहार लगानी पड़ रही है। समाजवादी पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे की शुरूआत समाजवादी सरकार में ही हो गई थी, साढ़े तीन साल में भी भाजपा इसे पूरा नहीं कर पाई है जबकि आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे दो वर्ष से कम समय में ही बनायी गई थी।

लोहिया पार्क, जनेश्वर मिश्र पार्क और गोमती रिवर फ्रंट जैसे आकर्षक स्थलों का निर्माण समाजवादी सरकार ने किया था ताकि जनता को स्वास्थ्यप्रद, वातावरण मिल सके। खेलकूद प्रेमियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का इकाना स्टेडियम भी समाजवादी सरकार की देन है। समाजवादी सरकार में किए गए कामों के बजाय सदुपयोग करने के, भाजपा सरकार उनको बर्बाद करने में लगी है। साइकिल ट्रैक पर्यावरण के लिहाज से

यूपी डायल 100 का नाम 112 रखकर भाजपा सरकार ने कौन सा कमाल कर दिया। बंद हो चुकी 181 में कार्यरत महिलाओं को आज भी वेतन के लिए गुहार लगानी पड़ रही है।

उपयोगी योजना थी। उन्हें अतिक्रमण का शिकार बना दिया गया।

भाजपा सरकार की न तो नीतियां सही हैं और नहीं नीयत। नतीजे में उत्तर प्रदेश के विकास का पहिया थम गया है। समाजवादी सरकार में उत्तर प्रदेश विकास की गति पकड़ ली थी लेकिन अब साढ़े तीन साल बीत गए भाजपा सरकार एक भी ऐसा काम नहीं दिखा पाई जिस पर वह अपना दावा कर सके। समाजवादी पार्टी के कार्यो में ही हेराफेरी करके वह अपना चेहरा बचाती आ रही है। 'डुप्लीकेट लोकार्पण' की घटनाओं से ऐसा लगता है कि सत्ता से चलाचली के चंद दिन रह जाने पर भाजपा सरकार अपनी बची खुची इज्जत बचाने के लिए ढूढ़- ढूढ़कर समाजवादी सरकार के कामों पर पत्थर चिपकाने की मुहिम में जुट गए हैं।

भाजपा सरकार ने साढ़े तीन साल तो समाजवादी पार्टी के कामों को अपना बताने में ही बिता दिए हैं। इस काम में उन्हें न कोई संकोच है और न हीं लाज। कहने भर को भी वे अपनी एक भी योजना लागू नहीं कर सके। प्रदेश की जनता का इसी लिए भाजपा सरकार से मोहभंग हो चुका है और सत्तादल के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा है। जनता की उम्मीद अब फिर समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर टिकी हुई हैं जिसके सत्ता में रहते हर क्षेत्र में विकास के कीर्तिमान स्थापित हुए थे।

उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी की सरकार के समय इटावा में लायन सफारी का निर्माण हुआ था। अपनी शुरुआत के दिनों से ही यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। सोनभद्र में गुलरिया पहाड़ी 20 वर्ष पूर्व ही उजाड़ और हरियाली विहीन हो चुकी थी। प्राकृतिक पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा था। समाजवादी पार्टी की सरकार के समय सन 2016 में पौधरोपण का काम व्यापक पैमाने पर किया गया। आज पहाड़ी पर हरियाली फिर लौट आई है। बुंदेलखंड में समाजवादी सरकार ने 5 करोड़ पौधे लगाकर एक रिकार्ड कायम किया था।

समाजवादी सरकार के समय विश्व स्तरीय खेलों के लिए लखनऊ में इकाना स्टेडियम बना जिसके नजदीक आधुनिक बाजार शाने अवध का निर्माण हुआ था जिसे भाजपा सरकार ने औने-पौने दामों में बेच दिया। स्वतंत्रता संग्राम के साथ आपातकाल की स्मृतियों को भी ताजा रखने के लिए जय प्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बना। जिसमें स्वतंत्रता संग्राम की यादें संजोई गईं। यहां कई सेमिनार कक्ष, अतिथि गृह, पुस्तकालय आदि के रखरखाव के लिए भाजपा सरकार पैसा देने में भी पीछे हट गई है। सेंटर में लगे कीमती उपकरण धूल खा रहे हैं।

भाजपा सरकार ने साढ़े तीन साल तो समाजवादी पार्टी के कामों को अपना बताने में ही बिता दिए हैं। इस काम में उन्हें न कोई संकोच है और न हीं लाज। कहने भर को भी वे अपनी एक भी योजना लागू नहीं कर सके। प्रदेश की जनता का इसी लिए भाजपा सरकार से मोहभंग हो चुका है और सत्तादल के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

लखनऊ में सपा सरकार में बेहतर पुलिसिंग सिस्टम बनाया गया था। स्वास्थ्य सेवाएं सुधरी थी। महिलाओं की सुरक्षा के लिए 1090 सेवा शुरू की गई थी। अपराध नियंत्रण के लिए यूपी डायल 100 सेवा शुरू की गई थी। एम्बुलेंस सेवा 108 बहुउपयोगी साबित हुई। भाजपा ने एक ही काम किया सपा सरकार ने जनहित में जो योजनाएं चलाई थी उन्हें निष्प्रभावी बना दिया। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे, आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे तथा जिला मुख्यालय से गांव तक फोरलेन सड़के बनाकर समाजवादी सरकार ने प्रगति को रफ्तार दी। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे की शुरुआत समाजवादी पार्टी सरकार में हुई, भाजपा साढ़े तीन साल में भी उसे पूर्ण नहीं कर सकी है। लखनऊ में मेट्रो अखिलेश जी के मुख्यमंत्रित्वकाल में ही शुरू हुई। आज तक भाजपा सरकार वाराणसी, गोरखपुर जैसे वीवीआईपी जिलों में भी मेट्रो नहीं चला सकी।

समाजवादी सरकार के समय ही लखनऊ में जनेश्वर मिश्र पार्क बना जो एशिया का सबसे बड़ा पार्क है। यहां की हरियाली, झील और सुखद माहौल रोज बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करते हैं।

श्री अखिलेश यादव के प्रयासों से लखनऊ में सॉफ्टवेयर पार्क बना, अमूल डेयरी का प्लांट लगा, एचसीएल की यूनिट लगी, नोएडा में सैमसंग स्थापित कराने का श्रेय भी श्री अखिलेश यादव को जाता है। लैपटॉप और डिजिटल यूपी की दिशा में प्रगति हुई।

विकास के लिए भाजपा सरकार के पास न तो कोई योजना है और नहीं कोई विजन है। समाजवादी सरकार के कामों को अपना बताना और श्री अखिलेश यादव के निर्माण पर अपने नाम का पत्थर लगाना उसके अब तक के कार्यकाल की एक मात्र उपलब्धि है। शिलान्यास का फिरसे शिलान्यास और उद्घाटन का फिर से उद्घाटन करके ही वह अपना रिपोर्ट कार्ड सजा रही है।

बिजली दे रही झटका

भाजपा राज में बिजली कम, झटका ज्यादा

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने अपने कार्यकाल में एक मेगावाट भी अतिरिक्त बिजली उत्पादन बढ़ाने की पहल भले न की हो लेकिन बिजली उपभोक्ताओं को त्रस्त करने के तमाम काम यह सरकार जरूर कर रही। जनता की बिजली दरें बढ़ाकर या मीटर तेज चलाकर उपभोक्ताओं की जेब पर डाका डालने की विभागीय कारगुजारियों पर पर्दा डालने के लिए ऊर्जा मंत्री महोदय सरकार की चलाचली की बेला में साइकिल की सवारी करके और खुद ही बकाया वसूली करके जनता का ध्यान बंटाने का नाटक कर रहे हैं।

जनता से धोखाधड़ी में पारंगत भाजपा सरकार ऐन केन प्रकारेण बिजली दरों को बढ़ाने की जुगत में है। मौका मिलते ही वह 80 प्रतिशत

घरेलू उपभोक्ताओं पर और बोझ डालेगी जबकि ज्यादा बिजली खपत करने वालों पर राहत बरसेगी। इससे पहले भी बिजली दरों में वृद्धि की जा चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू तथा किसानों के नलकूप की बिजली दरों में भारी बढ़ोतरी पहले भी हो चुकी है।

दरअसल भाजपा सरकार ने बिजली के क्षेत्र में गहरी उदासीनता और अक्षमता का परिचय दिया है। भाजपा सरकार में एक यूनिट बिजली का उत्पादन नहीं हुआ। समाजवादी सरकार ने बिजली के क्षेत्र में जो सुधार किए थे उन्हें निष्प्रभावी बनाया जा रहा है।

भाजपा सरकार का सबसे बड़ा बिजली घोटाला मीटर खरीद को लेकर है। पिछले तीन वर्षों में प्रदेश में करीब 2000 करोड़ रुपये के इलेक्ट्रिानिक मीटर व 500 करोड़ रुपये के करीब 12 लाख स्मार्ट मीटर खरीदे गए हैं। बिना किसी जांच ग्रामीण क्षेत्र में सौभाग्य योजना के अंतर्गत गरीबों के घर में बिजली मीटर लगते हैं। खरीदे गए इन मीटरों में तकनीकी खामियां सामने आई हैं। इन मीटरों को लगाते समय मीटर की संचार प्रणाली का टेस्ट नहीं किया गया। नई परियोजना या साफ्टवेयर जब किसी नई योजना के लिए लागू होता है तो पहले यूजर एक्सेंप्टेंस टेस्ट (यूएटी) कई चरणों में होता है, इसे भी नहीं किया गया।

दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम ने तो ऐसे मीटर लिए जो बिना लगे ही मीटर रीडिंग कर देते हैं। घरों में बिना मीटर लगाए ही ऑनलाइन सिस्टम में मीटर फीड के मामले चौंकाने वाले हैं। इसकी वजह से उपभोक्ताओं के घरों में गलत बिल आने लगे हैं। ऊपर से नीचे तक मीटर घोटाले को दबाने की साजिश चल रही है।

भाजपा सरकार ने समाजवादी सरकार के समय की बुनकरों की सन् 2006 की फ्लैट रेट बिजली योजना को समाप्त कर उनकी रोजी-रोटी पर वार किया है। बुनकर समाज के प्रति भाजपा सरकार

भाजपा सरकार का सबसे बड़ा बिजली घोटाला मीटर खरीद को लेकर है। पिछले तीन वर्षों में प्रदेश में करीब 2000 करोड़ रुपये के इलेक्ट्रिानिक मीटर व 500 करोड़ रुपये के करीब 12 लाख स्मार्ट मीटर खरीदे गए हैं।

भेदभाव, अन्याय और राजनीतिक उपेक्षा प्रदर्शित कर रही है। बुनकरों को सन् 2006 से फ्लैट रेट पर बिजली मिल रही थी। जबसे भाजपा सरकार आई बुनकर तबाही के कगार पर पहुंच गए हैं। लगातार ढ़ाई वर्ष की कोशिशों के बाद भी उन्हें न्याय नहीं मिला है। बुनकर अनिश्चित कालीन बंदी कर आंदोलन कर रहे हैं।

इस मामले में मेरठ के विधायक श्री रफीक अंसारी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश बुनकर सभा के अध्यक्ष हाजी इफ्तेखार अहमद अंसारी और मीडिया प्रभारी श्री नसीम अंसारी के साथ आए सैकड़ों बुनकर भाइयों ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से मुलाकात की और ज्ञापन भी सौंपा। श्री यादव ने बुनकर समाज के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कोरोना संकट और लाॅकडाउन से सबसे ज्यादा आर्थिक संकट में बुनकर हैं। उन्हें बिजली की पुरानी सुविधा मिलनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि बुनकर समाज और समाजवादी पार्टी के रिश्ते अटूट हैं। बुनकर समाज को आज जो तकलीफें उठानी पड़ रही हैं, समाजवादी सरकार बनने पर उन्हें दूर करने में पीछे नहीं रहेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सन् 2022 के चुनावों में सावधानी से वोट डालना होगा। समाजवादी पार्टी की जीत लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। बुनकर प्रतिनिधियों ने उम्मीद जताई कि उनकी जरूरतें समाजवादी सरकार ही पूरा करेगी। दलितों, वंचितों और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति समाजवादी पार्टी की हमदर्दी है। भाजपा कारपोरेट घरानों के हितों की ही चिंता करती है।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सपा के लखनऊ में बनाए 'सुपर स्पेशिलिटी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड हॉस्पिटल' के लोकार्पण पर जनता को बधाई। उप्र की जनता के लिए किए गये सपा के जनहितकारी कामों में ये भी एक मील का पत्थर है.

लगता है उप्र की भाजपा सरकार सपा के काम का फीता काटने के लिए ही बनी है.

#सपा_का_काम_जनता_के_नाम

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आदिवासी समाज के वरिष्ठ नेता एवं गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोंडवाना रत्न दादा हीरा सिंह मरकाम जी के निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि! दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति के लिए प्रार्थना.

ये आदिवासी समाज व देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है.

Translate Tweet

← Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

युवा कह रहे पुकार के अब बाहर 'जुमलेबाज' होंगे
देखना आनेवाले कल में अब युवा ही 'युगराज' होंगे

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आगरा के एक व्यस्त रिहायशी इलाके में एक महिला डॉक्टर के घर में घुसकर गला रेतकर उसकी हत्या किये जाने की घटना से प्रदेश स्तब्ध है. भाजपा सरकार भ्रष्ट अधिकारियों को बचाने व विपक्षियों को झूठे मुक़दमों में फँसाने में लगी है.

सरकार टीवी पर प्रचार की जगह, उप्र में अपराध पर विचार करे.

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए देश के लिए प्राणों की आहुति देने वाले पुलिस के सभी अमर शहीदों को सादर नमन।
#PoliceCommemorationDay

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अपनी नाकामियों पर उन्होंने लाख उठायी दीवार
फिर भी दोस्त ने कह दिया इनकी हवा है ख़राब

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा रेहड़ी-पटरीवालों को ऋण देने की बात भी कह रही है और उनके आत्मनिर्भर होने की विरोधाभासी बात भी. इस झूठी मदद के लिए 'बड़े लोगों' ने जितना प्रचार में ख़र्च किया है अगर इतना सच में रेहड़ी-पटरीवालों को दे देते तो लाखों लोगों का भला हो जाता.
पटरीवाले ही भाजपा को सड़क पर लाएँगे.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र में न दलित उत्पीड़न रूक रहा है, न अपराध. अमेठी में एक दलित प्रधान के पति को ज़िंदा जलाने व घाटमपुर में पुलिस की संलिप्तता से हत्या की दुर्दान्त घटना हुई है.
अगर स्टार प्रचारक प्रदेश प्रधान जी को समय हो तो दलित-अपराध पर भी स्टार विचारक की भूमिका निभाएं.
#नहीं_चाहिए_भाजपा

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या LW/NP-300/2018-2020

सपा का संघर्ष

जारी है और रहेगा

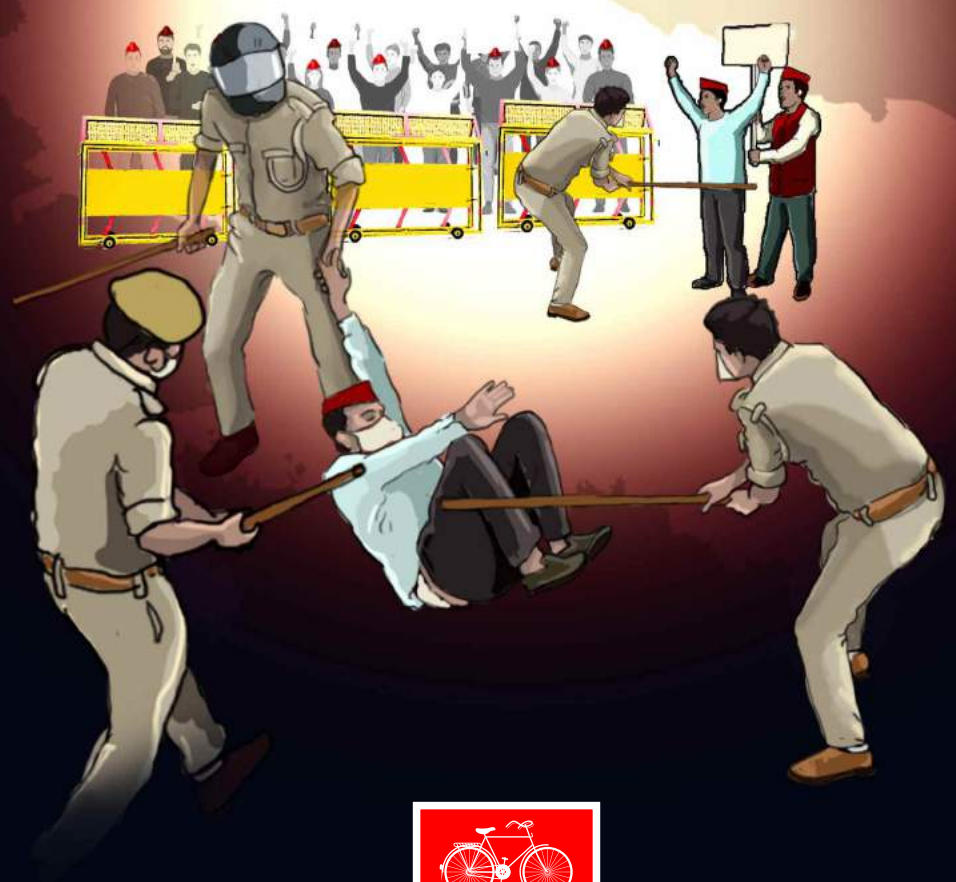

समाजवादी पार्टी

www.samajwadiparty.in